भवानीप्रसाद मिश्र की कविता / चार कौए

बहुत नहीं थे सिर्फ चार कौए थे काले
उन्होंने यह तय किया कि सारे उड़ने वाले
उनके ढंग से उड़ें, रुकें, खायें और गायें
वे जिसको त्योहार कहें सब उसे मनायें ।

कभी-कभी जादू हो जाता है दुनिया में
दुनिया भर के गुण दिखते हैं औगुनिया में
ये औगुनिए चार बड़े सरताज हो गये
इनके नौकर चील, गरूड़ और बाज हो गये ।

हंस मोर चातक गौरैयें किस गिनती में
हाथ बांधकर खड़े हो गए सब विनती में
हुक्म हुआ, चातक पंछी रट नहीं लगायें
पिऊ-पिऊ को छोड़ें कौए-कौए गाय ? ।

बीस तरह के काम दे दिए गौरैयों को
खाना-पीना मौज उड़ाना छुटभैयों को
कौओं की ऐसी बन आयी पांचों घी में
बड़े-बड़े मनसूबे आये उनके जी में
उड़ने तक के नियम बदल कर ऐसे ढाले
उड़ने वाले सिर्फ रह गये बैठे ठाले ।

आगे क्या कुछ हुआ सुनाना बहुत कठिन है
यह दिन कवि का नहीं चार कौओं का दिन है
उत्सुकता जग जाये तो मेरे घर आ जाना
लंबा किस्सा थोड़े में किस तरह सुनाना ।...

तुम कोई अच्छा-सा रख लो अपने दीवाने का नाम

ललित टिप्पणी / असग़र वजाहत

कहते हैं नाम में क्या रखा है। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि नाम में बहुत कुछ रखा है। मिसाल के तौर पर फिल्मी लेखक और उर्दू के शायर जावेद अख्तर कहते हैं कि नाम तो बहुत इंपॉर्टेंट होता है । मान लीजिए गब्बर सिंह का नाम शराफत अली होता तो क्या होता है? और मान लीजिए की धन्नो का नाम सावित्री होता तो क्या होता....इसलिए नाम बहुत इंपॉर्टेंट है... शायद यही वजह है कि आजकल नाम बदलने का चलन जोरों पर है। हमारे एक दोस्त ने अपने कुत्ते का नाम शेरू रख दिया और शेरू को शेर से लड़वा दिया। नतीजे में लड़ाई , जो जल्दी ही ख़त्म हो गई थी, के बाद शेरू की सिर्फ दुम ही मिल पाई थी। लेकिन इस घटना से नाम बदलने का महत्व कम नहीं होता । यही वजह है कि आजकल नाम बदलने पर जोर है।

अभी सुबह रास्ते में मोहम्मद हलीम मिले थे। सलाम दुआ के बाद मैंने कहा हलीम साहब अपने लिए कोई अच्छा सा नाम सोच कर रख लीजिए।

कहने लगे क्या मतलब है?

मैंने कहा सड़कों और शहरों के नाम बदलने के बाद जल्दी ही आदमियों के नाम बदलने का नंबर आएगा। आपसे कहा जाएगा कि आपका नाम भारत की गुलामी का प्रतीक है और इसे बदलना पड़ेगा। यदि नाम न बदला तो फिर प्रतीक को सहन नहीं किया जाएगा ।तब आप क्या करेंगे? नाम बदलना आपकी मजबूरी हो जाएगा। तब कोई दूसरा नाम आप क्या रखेंगे? मोहम्मद हलीम ने कहा, मैंने सोच लिया है ।मैं अपना दूसरा नाम पंडित राजकुमार शर्मा रखूंगा।

मैंने कहा यह नाम तो ब्राह्मण नाम है । आपको कौन रखने देगा।

फिर क्या करूं? उन्होंने ने कहा।

मैंने उनसे पूछा- आप की जाति क्या है ?

वे बोले, इस्लाम में जाति तो होती नहीं ।

मैंने कहा, मैं इस्लाम पर लिखी हुई किताबों की बात नहीं कर रहा, भारतीय मुसलमानों की बात कर रहा हूं। क्या उनके यहां जाति नहीं होती?

वे कुछ शरमाते हुए बोले, हां होती तो है ।

मैंने कहा,आपकी मुस्लिम जाति के टक्कर की जो हिंदू जाति हो, आप उस जाति का हिंदू नाम रखें।

उन्होंने कहा कि मैं शेख हूं। क्या मैं यादव नाम रख सकता हूं?

मैंने कहा ऐसा गजब न करना ।यादव तुम्हें पीट-पीटकर पराठा बना देंगे।

वे बोले गुस्सा रख सकता हूं, गुस्सा?

मैंने कहा गुस्सा रखने की तुम्हारी क्या हैसियत है। गुस्सा तो व्यापारी होते हैं। बड़ी-बड़ी दुकानें होती है उनकी। तुम उनमें कहां खप पाओगे?

वे बोले तो फिर क्या करूं ?

मैंने कहा सोच लो, वैसे च्चोआइसज्ज बहुत कम है।

हलीम साहब ने मुझसे पूछा, तुमने क्या सोचा है।

मैंने कहा, मैंने तो बड़ा पक्का सोच लिया है। अपना नाम छेदीलाल । अब यहां से और 'कहां' जाऊंगा?

उन्होंने कहा, यार आदमी बड़े समझदार हो। मुझे भी ऐसे ही कुछ करना पड़ेगा।

हलीम साहब चले गए ।और किस्सा नाम का निकल आया था इसलिए फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़' की यह ग़ज़ल याद आ गई .....तुम कोई अच्छा सा रख लो अपने दीवाने का नाम.....

रंग पैराहन का, खुश्बू जुल्फ लहराने का नाम
मौसम-ए-गुल है तुम्हारे बाम पर आने का नाम
दोस्तों उस चश्म-ओ-लब की कुछ कहो जिसके बगैर
गुलिस्तान की बात रंगीन न मैखाने का नाम
फिर नज़र में फूल महके दिल में फिर शमा जली
फिर तसव्वुर ने लिया उस बज्म में जाने का नाम
मोहतसिब की खैर, ऊंचा है उसी के नाम से
रिंद का, साक़ी का, मय का, खुम का, पैमाने का नाम
हम को कहते हैं चमन वाले गरीबान-ए-चमन
तुम कोई अच्छा सा रख लो अपने दीवाने का नाम
फैज़ उनको है तक़ाज़ा-ए-वफ़ा हम से जिन्हें
आशना के नाम से प्यारा है बेगाने का नाम

व्यंग्य

स्टेट बैंक में खाता खुलवा कर भी पापों का प्रायश्चित किया जा सकता है..

छौटा मोटा पाप हो, तो बैंक में बैलेंस पता करने चले जाएँ। चार काउन्टर पर धक्के खाने के बात पता चलता है, कि बैलेंस गुप्ता मैडम बताएगी।

गुप्ता मैडम का काउन्टर कौन सा है, ये पता करने के लिए फिर किसी काउन्टर पर जाना पड़ता है।

लेवल वन कम्प्लीट हुआ। यानी गुप्ता मैडम का काउन्टर पता चल गया है। लेकिन अभी थोड़ा वेट करना पड़ेगा, क्योंकि मैडम अभी सीट पर नहीं है।

आधे घंटे बाद चश्मा लगाए, पल्लू संभालती हुई, युनिनोर की 2 प्रतिशत स्पीड से चलती हुई गुप्ता मैडम सीट पर विराजमान हो जाती है। आप मैडम को खाता नंबर देकर बैलेंस पूछते है।

मैडम पहले तो आपको इस तरह घूरती हैं, जैसे आपने उसकी बेटी का हाथ मांग लिया है। आप भी अपना थोबड़ा ऐसे बना लेते हैं, जैसे सुनामी में आपका सबकुछ उजड़ गया है, और आज की तारीख में आपसे बड़ा लाचार दुखी कोई नहीं है।

गुप्ता मैडम को आपके थोबड़े पर तरस आ जाता है, और बैलेंस बताने जैसा भारी काम करने का मन बना लेती है। लेकिन इतना भारी काम, अकेली अबला कैसे कर सकती है? तो मैडम सहायता के लिए आवाज लगाती हैं- मिश्रा जी....., ये बैलेंस कैसे पता करते है?

मिश्राजी, अबला की करुण पुकार सुनकर अपने ज्ञान का खजाना खोल देते है- "पहले तो खाते के अंदर जाकर क्लोजिंग बैलेंस पर क्लिक करने पर बैलेंस आ जाता था। लेकिन अभी सिस्टम चैंज हो गया है। अभी आप *द्ध5* दबाएँ, और इंटर मार दे तो बैलेंस दिखा देगा.."

गुप्ता मैडम चश्मा ठीक करती हैं, तीन बार मोनिटर की तरफ और तीन बार की-बोर्ड की तरफ नजर मारती हैं। फिर उंगलियाँ की-बोर्ड पर ऐसे फिरातीं हैं, जैसे कोई तीसरी क्लास का लड़का व्लर्ड मैप में सबसे छोटा देश मस्कट ढूंढ रहा हो।

मैडम फिर मिश्रा जी को मदद के लिए पुकारती हैं- "मिश्रा जी, ये द्ध5 किधर है.. ??"

मैडम की उम्र पचास से ऊपर होने के कारण शायद मिश्रा जी पास आकर मदद करने की जहमत नहीं उठाते। इसलिए वहीं बैठे बैठे जोर से बोलते हैं- "की बोर्ड में सबसे ऊपर देखिये मैडम.."

"लेकिन सबसे ऊपर तो सिर्फ तीन बत्तियां जल रही हैं.."

"हां उन बत्तियों के नीचे है। लम्बी लाईन है *1 से लेकर 12* तक.."

फायनली, मैडम को 5 मिल जाता है। मैडम झट से बटन दबा देती हैं। मोनिटर पर आधे घंटे जलघड़ी, (कुछ लोग उसे डमरू समझते है) बनी रहती है।

अंत में एक मैसेज आता है- **"Session expired. Please check your connection.."**

मैडम अपने हथियार डाल देती हैं। एक नजर, आपके गरीबी लाचारी से पुते चेहरे पर डालती है- "सॉरी, सर्वर में प्रोब्लम है.."

कहने का टोन ठीक वैसा ही होता है, जैसे पुरानी फिल्मो में डॉक्टर ओपरेशन थियेटर से बाहर आ कर कहता था "सॉरी हमने बहुत कोशिश की, पर ठाकुर साहब को नहीं बचा पाए.."

- राजीव शंकर मिश्रा

देश 'हिंदू तीर्थ' नामक किताब और अकबर का इलाहाबाद!

गंगा का प्रवाह मोड़कर कोई नगर आबाद करने वाला अकेला सम्राट है अकबर!

बोधित्सव

1954 में इलाहाबाद के मान्य प्रकाशक रामनारायण लाल वेनीमाधव ने हिंदू तीर्थ नाम से एक महत्वपूर्ण किताब प्रकाशित की। किताब का उद्देश्य भारत भर के सभी तीर्थों से हिंदू तीर्थ यात्रियों को परिचित कराना था। उसमें प्रयाग और इलाहाबाद की ऐतिहासिकता का बढ़ा ही रोचक वर्णन है। किताब के लेखक व्यथित हृदय जी हैं। जो तब कटरा मोहल्ले में रहते थे।

प्रयाग के बारे में लिखते हुए व्यथित जी लिखते हैं कि जहाँ आज का शहर है पहले यहाँ जंगल था। और उस जंगल में एक वनवासी ग्रामीण आबादी थी। वह जंगल निश्चित रूप से उसी हिस्से में रही होगी। जहाँ आज भरद्वाज आश्रम का हिस्सा वर्तमान है।

व्यथित जी किताब में अकबर के बाँध पर अलग से लिखते हुए बताते हैं कि 'यह बाँध अकबर ने किले की रक्षा के लिए बनवाया। यह बाँध एलनगंज से किले तक बनाया गया था।' मैंने पीछे इस बाँध को एलनगंज से दारागंज तक ही बनाया हुआ बताया है। अपने पिछले एक लेख में। इस किताब में व्यथित जी आगे लिखते हैं कि 'इस बाँध से शहर की रक्षा होती है।'

हिंदू तीर्थ' के अनुसार अकबर ने गंगा के प्रवाह को आज के भरद्वाज आश्रम और टैगोरटाउन की तरफ से हटाकर झूंसी की तरफ मोड़ा। अगर ऐसा न हुआ होता तो आज जहाँ शहर आबाद है वहाँ गंगा बह रही होतीं और नगर इलाहाबाद संभव न होता। वाल्मीकि रामायण में राम ने भरद्वाज आश्रम से ही गंगा की कलकल ध्वनि सुनी है। वे लक्ष्मण और सीता से यह गंगा लहरी की आवाज सुनने को कहते हैं।

जो इलाहाबाद को भौगोलिक रूप से जानते हैं वे संगम और गंगा की आज की दूरी को देख कर भरद्वाज आश्रम से गंगा का प्रवाह सुनने की संभावना पर विचार कर सकते हैं।

मोटी बात यह है कि गंगा के प्रवाह को मोड़कर अकबर ने एक ऐतिहासिक कदम उठाकर एक नगर संभव किया। गंगा के प्रवाह को पहले भीष्म ने रोका फिर 450 साल पहले अकबर ने प्रवाह को मोड़ा। उसने बाँध बनाकर एक वन और डूब के क्षेत्र में नगर इलाहाबाद को स्थापित करता है। उसके और उसके पुत्र जहाँगीर के राज्य काल तक वह नगर इलाहाबास ही रहा। आगे भी प्रयाग की वह जंगल में आबाद बस्ती प्रयाग के नाम से ही अब तक आबाद है। गंगाजल पीकर रहनेवाले अकबर की महान सोच का परिणाम है आधुनिक नगर इलाहाबाद। यह बात कमसेकम इलाहाबादियों को याद रखनी चाहिए।

'हिंदू तीर्थ' किताब में तीर्थ यात्रियों को अकबर के कृतीत्व का इतिहास बताकर व्यथित हृदय जी तीर्थों का सच्चा इतिहास दर्ज करते हैं। वे चाहते तो लीपापोती करते। लेकिन वह अकबर और इलाहाबाद के साथ ऐतिहासिक अन्याय होता।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

योग से बनाए विचारों को सकारात्मक

मनुष्य को समाज के हित के विषय में सोचना चाहिए। ईश्वर ने मनुष्य को सोचने एवं विचार करने की अद्भुत शक्ति दी है। जिसका प्रयोग कर मानव अपनी विचारधारा को रचनात्मक दिशा में मोड़ सकता है और चंचल मन पर अंकुश लगा सकता है। भारतीय संस्कृति में भी अनेक ऐसे नियमों का उल्लेख है जिनके द्वारा हमारी विचारधारा को एक सकारात्मक रूप प्राप्त होता है। परन्तु बड़े खेद का विषय है, कि हम आज अपने बच्चों को नई-नई तकनीकी ज्ञान तो देते हैं, पर प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति के विषय में नहीं बताते हैं जो हमारी जड़ों की भांति हमें पोषक तत्व प्रदान करती है।

आवश्यकता है कि हम अपने बच्चों को किताबी शिक्षा के साथ-साथ अहिंसा, सत्य, असतेय जैसे यम नियमों से भी अवगत करायें जोकि योग का अहम हिस्सा हैं। यदि अपने बच्चों को अहिंसा के महत्व का पाठ पढ़ायें तो बच्चों में स्वत: अनेक प्रकार के उच्च कोटि की भावनाएँ उत्पन्न होंगी। उनकी विचार शक्ति में एक बड़ा परिवर्तन आएगा। उनके मन में समाज में सबके प्रति कर्त्तव्य भावना, प्रीति, प्रेम इत्यादि जागृत होगी जिससे कि विभिन्न प्रकार के विकार अर्थात अपराधों की संख्या कम होगा। वही सत्यता अर्थात सफाई के महत्व से भी बच्चों को अवश्य अवगत कराएँ। यदि हम बच्चों को सफाई की राह पर चलना सिखाएँ एवं झूठ को न अपनाएँ तो अवश्य ही अनेक विकृतियाँ समाप्त होंगी क्योंकि सभी प्रकार के अपराधों का कारण झूठ होता है।

क्योंकि झूठ बोलकर हम अपने गलत कार्यों से बचने की कोशिश करते हैं जो पाप को बढ़ावा देता है। उसी प्रकार बच्चों को अस्तेय अर्थात चोरी न करने का ज्ञान देना भी आवश्यक है जिससे वे किसी भी पराई वस्तु पर नज़र ही नहीं डाले। उनमें अपने द्वारा अर्जित किए गए धन एवं ज्ञान से संतुष्ट रहने की भावना जागृत हो। यदि हम बच्चों को बचपन से ही इन नियमों का पालन करना सिखाएँ तो बच्चा युवावस्था में आते-आते एक श्रेष्ठ नागरिक अवश्य बनेगा जो आत्मसंतोष और कर्त्तव्यपरायणता की भावना से ओत-प्रोत होगा।